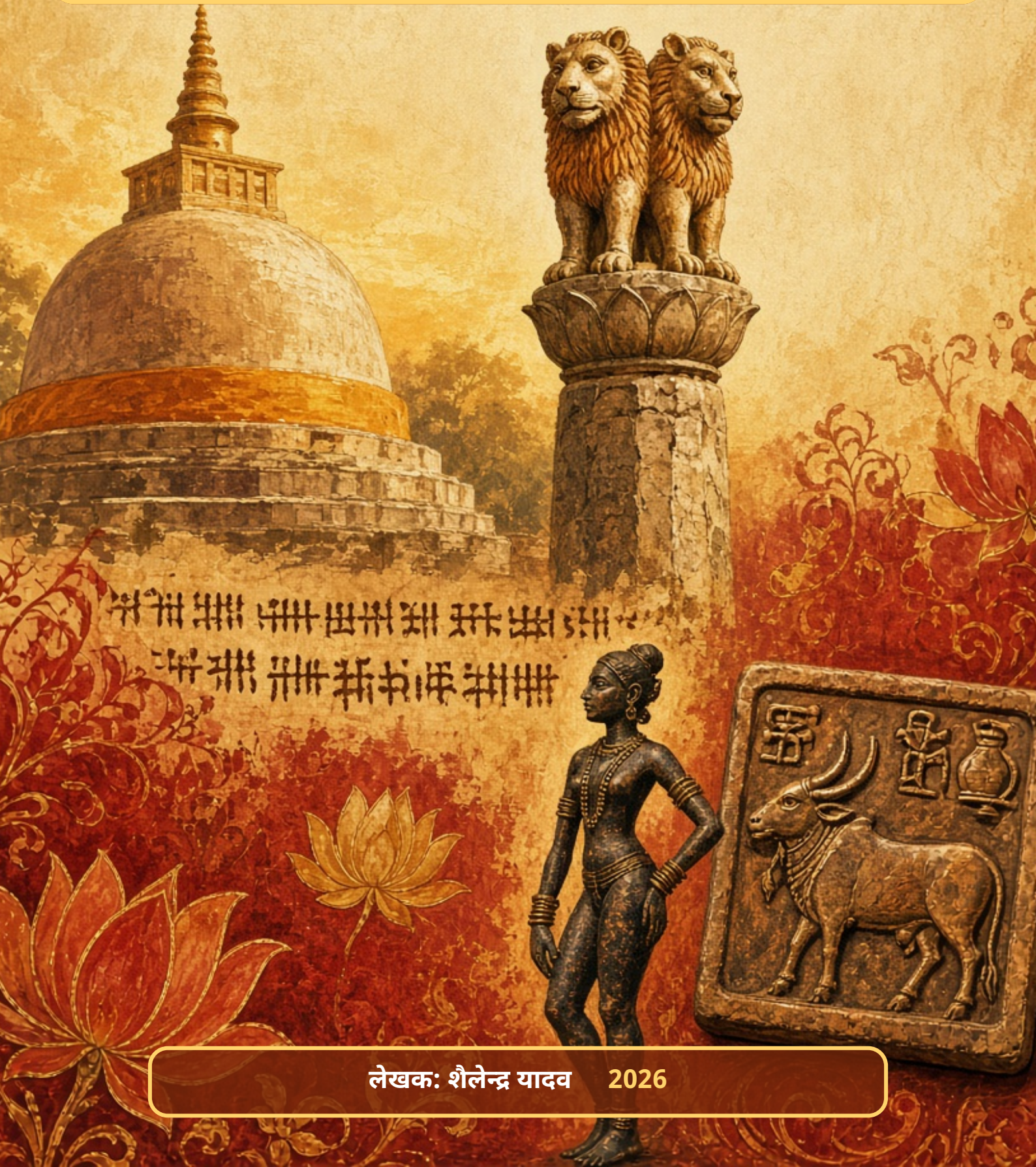


UPPCS सामान्य अध्ययन
भारतीय इतिहास
खण्ड 1: प्राचीन भारत

सम्पूर्ण समयरेखा पुस्तक



लेखक: शैलेन्द्र यादव 2026

विषय-सूची

भाग-1 : प्राचीन भारत**3**

अध्याय 1	पाषाण युग से सिंधु घाटी सभ्यता	4
अध्याय 2	वैदिक काल (ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक)	16
अध्याय 3	महाजनपद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म	29
अध्याय 4	मौर्य काल	45
अध्याय 5	मौर्योत्तर काल	59
अध्याय 6	गुप्त काल	71
अध्याय 7	गुप्तोत्तर काल	85

भाग-1

प्राचीन भारत

पाषाण युग से गुप्तोत्तर काल तक

अध्याय 1 — पाषाण युग से सिंधु घाटी सभ्यता

अध्याय 2 — वैदिक काल (ऋग्वैदिक एवं उत्तर वैदिक)

अध्याय 3 — महाजनपद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म

अध्याय 4 — मौर्य काल

अध्याय 5 — मौर्योत्तर काल

अध्याय 6 — गुप्त काल

अध्याय 7 — गुप्तोत्तर काल

इतिहास अध्याय 1 — समयरेखा एवं महत्वपूर्ण बिंदु: पाषाण युग से सिंधु घाटी सभ्यता

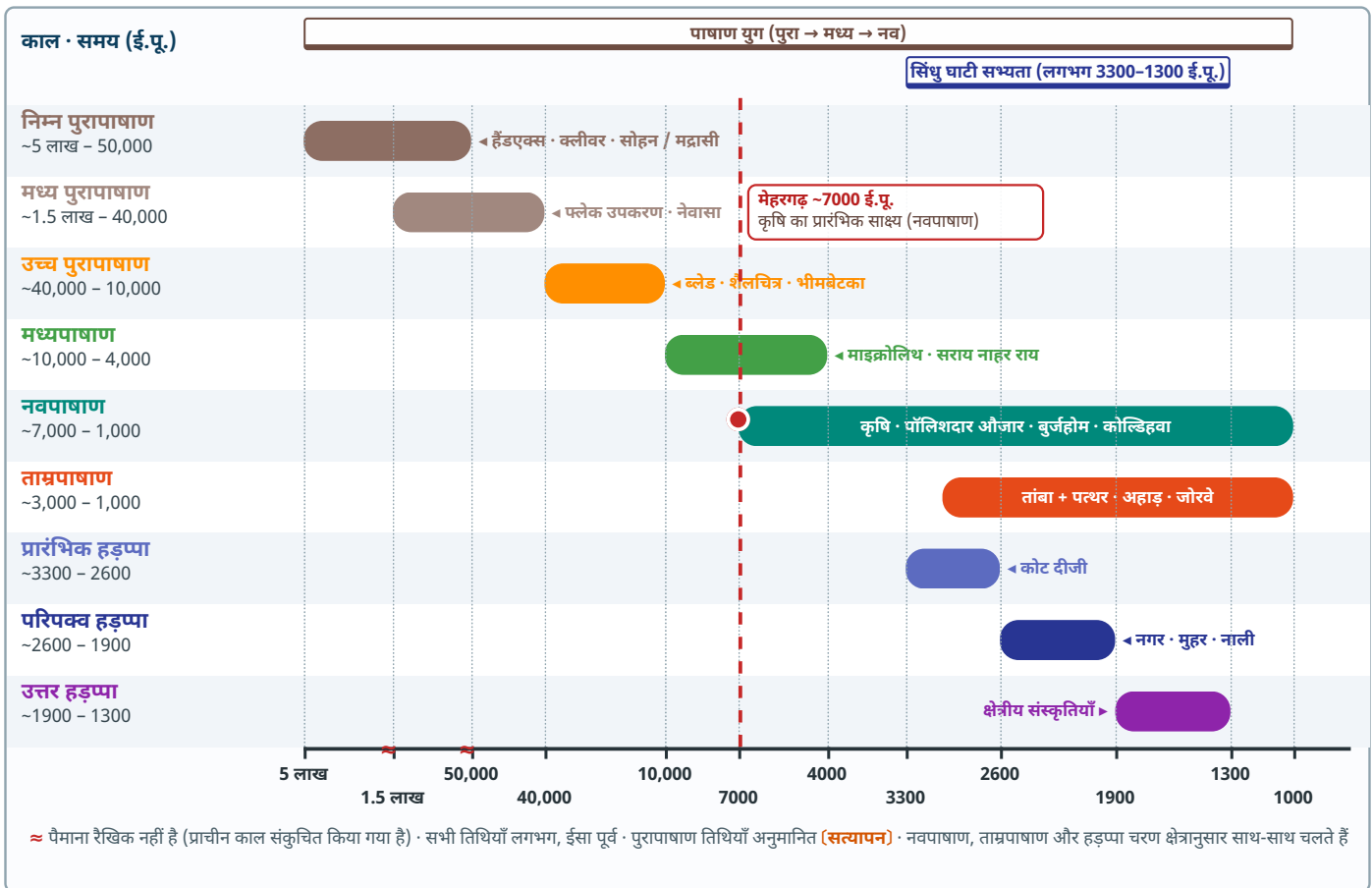
UPPCS प्रारंभिक परीक्षा · सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1 · प्राचीन भारत · अध्याय 1 · शैलेंद्र यादव

पुनरावृत्ति समय: लगभग 12 मिनट · लाल चिह्न [UPPCS वर्ष] = स्थानीय प्रश्नपत्र-फ़ाइलों से सत्यापित पूर्व प्रश्न · UPPCS-pattern = परीक्षा-शैली का बिंदु, वर्ष नहीं · (सत्यापन) = विवादित या स्रोत-जाँच योग्य तथ्य

12 मिनट में इस अध्याय को कैसे दोहराएँ

- पहले 2 मिनट में समयरेखा चित्र और काल सारणी देखें; केवल काल का क्रम और पहचान याद करें।
- अगले 5 मिनट में खोज समयरेखा तथा स्थल-नदी-राज्य सारणी पढ़ें, क्योंकि प्रारंभिक परीक्षा में सबसे अधिक प्रश्न स्थल-राज्य सुमेल से बनते हैं।
- अंतिम 5 मिनट में ट्रैप बॉक्स, उत्तर प्रदेश विशेष बॉक्स, स्मृति सूत्र और 10 बहुविकल्पीय प्रश्न हल करें।

1. मास्टर समयरेखा — पाषाण युग से सिंधु घाटी सभ्यता तक



याद रखें

- नवपाषाण काल (लगभग 7,000-1,000 ई.पू.) की अवधि लंबी है और यह ताम्रपाषाण तथा सिंधु घाटी सभ्यता के साथ-साथ चलती है; इसलिये "एक काल समाप्त होकर दूसरा शुरू हुआ" वाला कथन हर क्षेत्र के लिये सही नहीं है।
- मेहरगढ़ (लगभग 7,000 ई.पू., बलूचिस्तान) भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि और पशुपालन का प्रारंभिक साक्ष्य देता है; यह सिंधु घाटी सभ्यता का नगर नहीं, बल्कि उसका नवपाषाणकालीन पूर्वज है।

2. काल सारणी — काल, समय, पहचान और प्रमुख स्थल

काल	समय (लगभग, ई.पू.)	मुख्य पहचान	प्रमुख स्थल (उत्तर प्रदेश सहित)
निम्न पुरापाषाण	5 लाख – 50,000 (सत्यापन)	हैंडएक्स, क्लीवर, चॉपर; कोर उपकरण; शिकार और खाद्य-संग्रह	अत्तिरमपक्कम, पल्लवरम, हुनसगी, इसामपुर, सोहन घाटी, बेलन घाटी (प्रयागराज)
मध्य पुरापाषाण	1.5 लाख – 40,000	फ्लेक उपकरण — स्क्रेपर, पॉइंट, बोरर	नेवासा (महाराष्ट्र), भीमबेटका, डीडवाना, बेलन घाटी
उच्च पुरापाषाण	40,000 – 10,000	ब्लेड और ब्यूरिन; हड्डी के औजार; शैलचित्र	भीमबेटका, कुरनूल गुफाएँ, लोहंदा नाला (बेलन घाटी — हड्डी की मातृदेवी)
मध्यपाषाण	10,000 – 4,000	माइक्रोलिथ (सूक्ष्म पाषाण उपकरण); प्रारंभिक पशुपालन	बागोर, आदमगढ़, लंघनाज; सराय नाहर राय, महदहा, दमदमा (प्रतापगढ़), चोपानी माण्डो
नवपाषाण	7,000 – 1,000	कृषि, पॉलिशदार पत्थर के औजार, मिट्टी के बर्तन, स्थायी गाँव	मेहरगढ़, बुर्जहोम, गुफकराल, चिरांद; कोल्डिहवा (चावल), महगड़ा, लहुरादेव (संत कबीर नगर) (सत्यापन)
ताम्रपाषाण	3,000 – 1,000	तांबा + पत्थर के औजार; काले-लाल मृद्भांड; ग्रामीण बस्तियाँ	अहाड़, गिलुंद (राजस्थान); कायथा, नवदाटोली (मध्य प्रदेश); जोरवे, इनामगाँव (महाराष्ट्र)
प्रारंभिक हड़प्पा	3300 – 2600	ग्रामीण से नगरीय संक्रमण; किलेबंद बस्तियाँ	कोट दीजी, कालीबंगन (प्रारंभिक चरण), बनावली, राखीगढ़ी
परिपक्व हड़प्पा	2600 – 1900	नियोजित नगर, मुहरें, पक्की ईंटें, ढकी नालियाँ	हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा, लोथल, कालीबंगन
उत्तर हड़प्पा	1900 – 1300	नगरों का ह्रास; क्षेत्रीय ग्रामीण संस्कृतियाँ	दैमाबाद, रंगपुर, आलमगीरपुर, हुलास, सिनौली (सत्यापन)

परीक्षा पंक्ति: पुरापाषाण के तीनों चरण उपकरणों से पहचाने जाते हैं — निम्न = हैंडएक्स, मध्य = फ्लेक, उच्च = ब्लेड और कला। किसी भी पाषाण काल में धातु का प्रयोग नहीं होता; धातु (तांबा) पहली बार ताम्रपाषाण काल में आता है।

3. पुरापाषाण काल — महत्वपूर्ण बिंदु

3.1 निम्न पुरापाषाण काल (लगभग 5 लाख – 50,000 ई.पू.)

- इस चरण में मानव कोर उपकरण बनाता था, अर्थात् पत्थर के बड़े टुकड़े को छीलकर उपकरण तैयार किया जाता था।
- मुख्य उपकरण हैंडएक्स (हस्त-कुठार), क्लीवर (विदारणी) और चॉपर (खंडक) थे।
- इस चरण की दो प्रमुख परंपराएँ मानी जाती हैं — उत्तर-पश्चिम में सोहन (सॉहन) संस्कृति और प्रायद्वीपीय भारत में मद्रासी (अश्यूलियन) संस्कृति।
- लोग शिकार और खाद्य-संग्रह पर निर्भर थे; अग्नि के प्रारंभिक उपयोग के संकेत मिलते हैं (सत्यापन)।
- अत्तिरमपक्कम (तमिलनाडु) की परतें अत्यंत प्राचीन मानी जाती हैं; इनकी सटीक तिथियाँ विवादित हैं (सत्यापन)।

3.2 मध्य पुरापाषाण काल (लगभग 1.5 लाख – 40,000 ई.पू.)

- इस चरण में फ्लेक (शल्क) उपकरणों की प्रधानता रही — स्क्रेपर (खुरचनी), पॉइंट (वेधनी) और बोरर (छेदनी)।
- लेवाल्वा (Levallois) जैसी तकनीक के संकेत मिलते हैं।
- नेवासा (महाराष्ट्र, प्रवरा नदी) इस चरण का प्रमुख संदर्भ स्थल है। **UPPCS 2023**
- भीमबेटका में मध्य से उच्च पुरापाषाण की ओर संक्रमण के प्रमाण मिलते हैं।

3.3 उच्च पुरापाषाण काल (लगभग 40,000 – 10,000 ई.पू.)

- इस चरण में ब्लेड (फलक) और ब्यूरिन (तक्षणी) जैसे पतले, लंबे उपकरण बने; हड्डी और सींग के औजार भी प्रयोग हुए।

- **भीमबेटका (रायसेन, मध्य प्रदेश)** के शैलाश्रयों में शिकार, पशु और नृत्य के चित्र मिलते हैं। इन शैलचित्रों के प्रागैतिहासिक महत्व की खोज **वी. एस. वाकणकर** ने 1957 में की। **UPPCS 2020**
- **कुरनूल गुफाएँ (आंध्र प्रदेश)** हड्डी के उपकरणों के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **लोहंदा नाला (बेलन घाटी, प्रयागराज)** से हड्डी की बनी **मातृदेवी** की आकृति मिली है; यह उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण परीक्षा-तथ्य है।
UPPCS-pattern

3.4 सोहन संस्कृति बनाम मद्रासी संस्कृति

बिंदु	सोहन (सॉहन) संस्कृति	मद्रासी / अश्यूलियन संस्कृति
क्षेत्र	उत्तर-पश्चिम — सोहन नदी घाटी, पोतवार पठार (वर्तमान पाकिस्तान)	प्रायद्वीपीय भारत — चेन्नई क्षेत्र, अत्तिरमपक्कम
मुख्य उपकरण	चॉपर-चॉपिंग उपकरण (नदी के कंकड़ से बने)	हैंडएक्स और क्लीवर
कच्चा माल	नदी के गोल कंकड़ (पेबल)	मुख्यतः क्वार्ट्जाइट
उदाहरण स्थल	सोहन घाटी, पोतवार पठार	अत्तिरमपक्कम, पल्लवरम, गुडियम
परीक्षा नोट	उत्तर-पश्चिम और सिंधु क्षेत्र से जुड़ी परंपरा	दक्षिण भारत के निम्न पुरापाषाण की प्रतिनिधि; पल्लवरम में रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863) ने पहला हैंडएक्स खोजा

3.5 प्रमुख पुरापाषाण स्थल — स्थान और पहचान

स्थल	राज्य / क्षेत्र	पहचान
भीमबेटका	मध्य प्रदेश (रायसेन)	शैलचित्र; मध्य से उच्च पुरापाषाण; यूनेस्को विश्व धरोहर (2003) ; खोज — वाकणकर UPPCS 2020
अत्तिरमपक्कम	तमिलनाडु	निम्न पुरापाषाण हैंडएक्स; अत्यंत प्राचीन परतें (सत्यापन: तिथियाँ)
पल्लवरम	तमिलनाडु	रॉबर्ट ब्रूस फुट की प्रारंभिक खोज (1863)
गुडियम गुफा	तमिलनाडु	पुरापाषाणकालीन गुफा-आश्रय UPPCS 2023
नेवासा	महाराष्ट्र (प्रवरा नदी)	मध्य पुरापाषाण फ्लेक उद्योग UPPCS 2023
इसामपुर / हुनसगी	कर्नाटक	अश्यूलियन हैंडएक्स का सघन क्षेत्र UPPCS 2023
डीडवाना	राजस्थान	थार क्षेत्र की पाषाण संस्कृति UPPCS 2023
कुरनूल गुफाएँ	आंध्र प्रदेश	उच्च पुरापाषाण, हड्डी के उपकरण
बेलन घाटी	उत्तर प्रदेश (प्रयागराज-मिर्जापुर)	पुरापाषाण से नवपाषाण तक का क्रमबद्ध अनुक्रम

3.6 पुरापाषाणकालीन जीवनशैली

- **आजीविका:** लोग शिकार और खाद्य-संग्रह पर निर्भर थे; कृषि का ज्ञान नहीं था।
- **निवास:** गुफाएँ और चट्टानी आश्रय (शैलाश्रय) मुख्य निवास स्थल थे।
- **अग्नि:** भीमबेटका जैसे स्थलों पर अग्नि के उपयोग के प्रमाण मिलते हैं।
- **कला:** भीमबेटका के चित्रों में पशु, शिकार और नृत्य के दृश्य हैं।
- **समाज:** लोग छोटे घुमंतू समूहों में रहते थे; स्थायी गाँव नहीं थे।
- **धातु:** धातु पूर्णतः अनुपस्थित थी, इसलिये यह पूर्णतः पाषाण युग है।

4. मध्यपाषाण, नवपाषाण और ताम्रपाषाण — सेतु पट्टी

4.1 मध्यपाषाण काल (लगभग 10,000 – 4,000 ई.पू.)

- इस काल की पहचान **माइक्रोलिथ** है, अर्थात् छोटे ज्यामितीय पत्थर के उपकरण जिन्हें लकड़ी या हड्डी के हथ्थे में लगाया जाता था।
- जलवायु गरम और आर्द्र हुई; शिकार के साथ **प्रारंभिक पशुपालन** के संकेत मिलते हैं।
- **बागोर (राजस्थान)** और **आदमगढ़ (मध्य प्रदेश)** पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य के लिये प्रसिद्ध हैं; **लंघनाज (गुजरात)** भी प्रमुख स्थल है।
- उत्तर प्रदेश के **प्रतापगढ़ ज़िले** के तीन स्थल बार-बार पूछे जाते हैं — **सराय नाहर राय** (मानव कंकाल और समाधियाँ), **महदहा** (हड्डी के आभूषण, युगल समाधि) और **दमदमा** (अनेक समाधियाँ)। **UPPCS-pattern**
- **चोपानी माण्डो (बेलन घाटी)** मध्यपाषाण से नवपाषाण संक्रमण का स्थल है; यहाँ झोपड़ियों और हाथ से बने मिट्टी के बर्तनों के संकेत मिलते हैं।

4.2 नवपाषाण काल (लगभग 7,000 – 1,000 ई.पू.)

- इस काल में **पॉलिशदार पत्थर के औजार, कृषि (गेहूँ, जौ, चावल), पशुपालन और मिट्टी के बर्तन** आए; मनुष्य स्थायी गाँवों में बसने लगा।
- **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, बोलन नदी)** — उपमहाद्वीप में कृषि का प्रारंभिक साक्ष्य (लगभग 7,000 ई.पू.); यह हड़प्पा-पूर्व सेतु है।
- **बुर्जहोम (कश्मीर)** — गर्त-आवास (ज़मीन में गढ़े वाले घर) और मालिक के साथ कुत्ते को दफ़नाने की प्रथा।
- **चिरांद (बिहार)** — हड्डी के उपकरणों के लिये प्रसिद्ध।
- **कोल्डिहवा (बेलन घाटी, प्रयागराज)** — **चावल** की खेती का प्रारंभिक साक्ष्य; इसकी प्राचीन तिथि विवादित है (**सत्यापन: तिथि**)।
- **महगढ़ा (बेलन घाटी)** — पशुओं के बाड़े के प्रमाण।
- **लहुरादेव (संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश)** — प्रारंभिक चावल के साक्ष्य के लिये चर्चित; सटीक तिथि स्थानीय फ़ाइलों में उपलब्ध नहीं है (**सत्यापन**)।

4.3 ताम्रपाषाण काल (लगभग 3,000 – 1,000 ई.पू.)

- इस काल में पत्थर के साथ **तांबे** का प्रयोग शुरू हुआ; इसलिये इसे ताम्रपाषाण (तांबा + पाषाण) कहते हैं।
- बस्तियाँ मुख्यतः ग्रामीण थीं; **काले-लाल मृद्भांड** इसकी सामान्य पहचान हैं।

संस्कृति / स्थल	राज्य	विशेष पहचान
अहाड़ (बनास संस्कृति)	राजस्थान (उदयपुर)	तांबे के उपकरण; बनास नदी क्षेत्र
गिलुंद	राजस्थान	बनास संस्कृति का दूसरा प्रमुख स्थल
कायथा	मध्य प्रदेश (उज्जैन)	कायथा संस्कृति
नवदाटोली	मध्य प्रदेश (नर्मदा तट)	मालवा संस्कृति
जोरवे	महाराष्ट्र (प्रवरा नदी)	जोरवे संस्कृति का नामकरण स्थल
इनामगाँव	महाराष्ट्र (पुणे)	बड़ी किलेबंद ताम्रपाषाण बस्ती

5. खोज समयरेखा — कब, किसने, कहाँ

वर्ष	व्यक्ति	स्थल / घटना	परीक्षा बिंदु
1826	चार्ल्स मैसन	हड़प्पा के टीलों का उल्लेख	सबसे पहला लिखित संकेत
1853-1873	अलेक्जेंडर कनिंघम	हड़प्पा का भ्रमण, मुहर का प्रकाशन	महत्व नहीं पहचाना गया
1863	रॉबर्ट ब्रूस फुट	पल्लवरम (तमिलनाडु)	भारत में प्रथम पुरापाषाण हैंडएक्स
1921	दयाराम साहनी	हड़प्पा (रावी नदी)	सबसे पहले खोजा गया प्रमुख स्थल
1922	राखालदास बनर्जी	मोहनजोदड़ो (सिंधु नदी)	महान स्नानागार वाला नगर

वर्ष	व्यक्ति	स्थल / घटना	परीक्षा बिंदु
1924	जॉन मार्शल	नई सभ्यता की घोषणा	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक
1927	अरिल स्टाइन	सुत्कार्गेंडोर (बलूचिस्तान)	सबसे पश्चिमी स्थल
1931	एन. जी. मजूमदार	चन्हुदड़ो (सिंध)	मनके बनाने का केंद्र
1953	वाई. डी. शर्मा	रोपड़ (पंजाब, सतलुज)	स्वतंत्र भारत का प्रथम उत्खनित हड़प्पा स्थल
1953	ए. घोष	कालीबंगन की खोज (राजस्थान)	घग्गर नदी क्षेत्र
1955-1962	एस. आर. राव	लोथल (गुजरात)	गोदी (डॉकयार्ड)
1955	एफ. ए. खान	कोट दीजी (सिंध)	प्रारंभिक हड़प्पा
1957	वी. एस. वाकणकर	भीमबेटका (मध्य प्रदेश)	शैलचित्रों का प्रागैतिहासिक महत्व UPPCS 2020
1958	वाई. डी. शर्मा	आलमगीरपुर (मेरठ, उत्तर प्रदेश)	सबसे पूर्वी स्थल UPPCS 2023
1961-1969	बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर	कालीबंगन का उत्खनन	जुते खेत, अग्नि वेदिकाएँ
1964	जगपति जोशी	सुरकोटडा (कच्छ, गुजरात)	घोड़े की हड्डियों का दावा (सत्यापन)
1967-1968	जगपति जोशी	धोलावीरा की खोज	कच्छ का रण
1974	आर. एस. बिष्ट	बनावली (हरियाणा)	मिट्टी का खिलौना हल
1990 से	आर. एस. बिष्ट	धोलावीरा का उत्खनन	जल प्रबंधन, साइनबोर्ड
1997 से	अमरेन्द्र नाथ	राखीगढ़ी (हरियाणा)	भारत का सबसे बड़ा स्थल होने का दावा (सत्यापन)
2003	यूनेस्को	भीमबेटका विश्व धरोहर	शैलाश्रय
2005-2006	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	सिनौली (बागपत, उत्तर प्रदेश)	विशाल शवाधान स्थल (सत्यापन)
2018	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	सिनौली	तांबे से सज्जित रथ और ताबूत (सत्यापन)
2021	यूनेस्को	धोलावीरा विश्व धरोहर	भारत का 40वाँ विश्व धरोहर स्थल

खोज से जुड़ा ट्रैप

- सबसे पहले खोजा गया प्रमुख स्थल **हड़प्पा (1921)** है, मोहनजोदड़ो (1922) नहीं; इसीलिये इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता** भी कहते हैं।
- कालीबंगन की **खोज (1953, ए. घोष)** और **उत्खनन (1961-1969, बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर)** अलग-अलग तथ्य हैं; प्रश्न में "खोज" और "उत्खनन" शब्द ध्यान से पढ़ें।
- धोलावीरा की **खोज (जगपति जोशी)** और **विस्तृत उत्खनन (आर. एस. बिष्ट)** को भी अलग रखें।

6. सिंधु घाटी सभ्यता — परिचय, काल विभाजन और विस्तार

6.1 नामकरण और काल विभाजन

- इसे **सिंधु घाटी सभ्यता** कहते हैं क्योंकि प्रारंभिक स्थल सिंधु नदी तंत्र में मिले; पहले खोजे गए स्थल के आधार पर इसे **हड़प्पा सभ्यता** कहा जाता है।
- यह **कांस्य युगीन (ताम्र-कांस्य)** सभ्यता है; परिपक्व चरण में **लोहा पूर्णतः अनुपस्थित** था।
- **प्रारंभिक हड़प्पा:** लगभग 3300-2600 ई.पू.; **परिपक्व हड़प्पा:** लगभग 2600-1900 ई.पू.; **उत्तर हड़प्पा:** लगभग 1900-1300 ई.पू।
- मानक कुल अवधि लगभग **3300-1300 ई.पू.** मानी जाती है।

6.2 भौगोलिक विस्तार — चार सीमांत स्थल

दिशा	सीमांत स्थल	स्थान / नदी
पूर्व	आलमगीरपुर UPPCS 2023	मेरठ, उत्तर प्रदेश — हिंडन नदी
पश्चिम	सुत्कागेंडोर	मकरान तट, बलूचिस्तान — दाश्त नदी
उत्तर	माण्डा UPPCS 2020	अखनूर, जम्मू-कश्मीर — चिनाब नदी
दक्षिण	दैमाबाद	अहमदनगर, महाराष्ट्र — प्रवरा नदी (उत्तर हड़प्पा)

परीक्षा पंक्ति: प्रमुख नदी तंत्र सिंधु और घग्गर-हकरा (जिसे कुछ विद्वान वैदिक सरस्वती मानते हैं (**सत्यापन**)) हैं। वर्ष 2023 में "हड़प्पा संस्कृति की पूर्वी सीमा" पूछी गई थी — उत्तर आलमगीरपुर है। **UPPCS 2023**

7. नगर नियोजन, महान स्नानागार, अन्नागार और ईंटें

7.1 नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताएँ

- **ग्रिड पद्धति:** सड़कें एक-दूसरे को **समकोण** पर काटती थीं; मुख्य सड़कें चौड़ी और गलियाँ नियोजित थीं।
- **दुर्ग और निचला नगर:** नगर प्रायः दो भागों में बँटा था — पश्चिम में ऊँचा **दुर्ग (सिटाडेल)** और पूर्व में **निचला नगर**; इससे सामाजिक या प्रशासनिक विभाजन का संकेत मिलता है।
- **अपवाद:** धोलावीरा तीन भागों (दुर्ग, मध्य नगर, निचला नगर) में बँटा था, जबकि **चन्हुदड़ो** में दुर्ग नहीं मिला।
- **जल निकासी:** पक्की और **ढकी हुई नालियाँ** घरों से जुड़ी थीं; यह विश्व की सबसे प्राचीन व्यवस्थित जल निकासी व्यवस्थाओं में से एक है।
- **घर:** घरों में कुएँ और स्नानघर थे; सीढ़ियों के प्रमाण से दूसरी मंज़िल की संभावना मिलती है।

7.2 महान स्नानागार (मोहनजोदड़ो)

- **स्थान:** मोहनजोदड़ो का दुर्ग क्षेत्र; यह **हड़प्पा में नहीं** है।
- **माप:** लगभग 11.88 मीटर × 7.01 मीटर × 2.43 मीटर (गहराई)।
- **निर्माण:** पक्की ईंटें; जलरोधन के लिये **बिटुमेन (प्राकृतिक डामर)** और जिप्सम का प्रयोग।
- दोनों ओर सीढ़ियाँ और चारों ओर कमरे तथा गलियारे थे।
- इसका उपयोग संभवतः **अनुष्ठानिक या सामुदायिक स्नान** के लिये होता था; यह व्याख्या है, निश्चित प्रमाण नहीं।

7.3 अन्नागार, ईंटें और माप-तौल

- **अन्नागार:** हड़प्पा (श्रमिक आवासों के पास, रावी तट) और मोहनजोदड़ो में; **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार** मानी जाती है।
- **ईंटें:** पक्की ईंटों का मानक अनुपात **1 : 2 : 4** (मोटाई : चौड़ाई : लंबाई) था। कालीबंगन में **कच्ची ईंटों** का भी प्रयोग हुआ।
- **बाट:** मानकीकृत **चर्ट के बाट**; छोटे बाट **16 के अनुपात** (द्विआधारी पद्धति) और बड़े बाट दशमलव पद्धति पर आधारित थे।

8. स्थल-नदी-राज्य-विशेषता मास्टर सारणी

स्थल	नदी	राज्य / देश	मुख्य विशेषता
हड़प्पा	रावी	पंजाब (पाकिस्तान)	1921; अन्नागार, श्रमिक आवास, कब्रिस्तान आर-37 ; सभ्यता का नाम इसी से
मोहनजोदड़ो	सिंधु	सिंध (पाकिस्तान)	महान स्नानागार , विशाल अन्नागार, कांस्य नर्तकी , पुजारी-राजा की मूर्ति, पशुपति मुहर; नाव का चित्रण UPPCS 2022
चन्हुदड़ो	सिंधु	सिंध (पाकिस्तान)	मनके बनाने का केंद्र ; दुर्ग नहीं
कोट दीजी	सिंधु	सिंध (पाकिस्तान)	प्रारंभिक हड़प्पा चरण
सुत्कागेंडोर	दाश्त	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)	सबसे पश्चिमी स्थल; व्यापार चौकी

स्थल	नदी	राज्य / देश	मुख्य विशेषता
कालीबंगन	घग्गर	राजस्थान (हनुमानगढ़)	जुते खेत, अग्नि वेदिकाएँ, कच्ची ईंटें; भूकंप के संकेत (सत्यापन)
लोथल	भोगवा (साबरमती के पास)	गुजरात (अहमदाबाद)	गोदी (डॉकयार्ड), मनका कारखाना, अग्नि वेदिका, फ़ारस की खाड़ी की मुहर; नाव का मिट्टी का मॉडल (UPPCS 2022)
धोलावीरा	मनहर-मानसर (धाराएँ)	गुजरात (कच्छ)	तीन भाग, जल प्रबंधन और जलाशय, साइनबोर्ड; विश्व धरोहर 2021
सुरकोटडा	—	गुजरात (कच्छ)	घोड़े की हड्डियों का दावा (सत्यापन); दुर्ग
रंगपुर	भादर	गुजरात	धान की भूसी; उत्तर हड़प्पा
पाडरी	—	गुजरात	हड़प्पा स्थल (UPPCS 2020)
बनावली	घग्गर (सरस्वती क्षेत्र)	हरियाणा (फ़तेहाबाद)	मिट्टी का खिलौना हल, जौ; पूर्व-हड़प्पा + हड़प्पा चरण
राखीगढ़ी	घग्गर-चौटांग क्षेत्र	हरियाणा (हिसार)	बड़ा नगरीय स्थल (सत्यापन: सबसे बड़ा होने का दावा); डीएनए अध्ययन (UPPCS 2025)
बालू	—	हरियाणा (कैथल)	हड़प्पा स्थल (UPPCS 2020)
रोपड़	सतलुज	पंजाब (भारत)	मनुष्य के साथ कुत्ते को दफ़नाने के प्रमाण
माण्डा	चिनाब	जम्मू-कश्मीर	सबसे उत्तरी स्थल (UPPCS 2020)
दैमाबाद	प्रवरा	महाराष्ट्र	सबसे दक्षिणी स्थल; कांस्य रथ की आकृति
आलमगीरपुर	हिंडन	उत्तर प्रदेश (मेरठ)	सबसे पूर्वी स्थल (UPPCS 2023)
हुलास	—	उत्तर प्रदेश (सहारनपुर)	उत्तर हड़प्पा स्थल (UPPCS 2020) (UPPCS 2025)
माण्डी	—	उत्तर प्रदेश (मुज़फ़्फ़रनगर)	हड़प्पा स्थल; स्वर्ण निधि के लिये चर्चित (सत्यापन) (UPPCS 2021) (UPPCS 2025)
सिनीली	यमुना क्षेत्र	उत्तर प्रदेश (बागपत)	शवाधान स्थल, रथ (2018) (सत्यापन)

माण्डा बनाम माण्डी — सबसे सस्ता जाल

- **माण्डा** = जम्मू-कश्मीर (अखनूर, चिनाब नदी), सबसे उत्तरी स्थल। (UPPCS 2020)
- **माण्डी** = उत्तर प्रदेश (मुज़फ़्फ़रनगर)। (UPPCS 2021) वर्ष 2025 में माण्डी, राखीगढ़ी और हुलास में से उत्तर प्रदेश के स्थल पूछे गए — सही उत्तर **माण्डी और हुलास** है; राखीगढ़ी हरियाणा में है। (UPPCS 2025)

9. अर्थव्यवस्था, व्यापार और लिपि

9.1 कृषि और पशुपालन

- **गेहूँ और जौ** मुख्य फसलें थीं; तिल, मटर और खजूर भी उगाए जाते थे। चावल के प्रमाण केवल कुछ स्थलों (**लोथल, रंगपुर**) पर मिलते हैं।
- **कपास** के विश्व के प्रारंभिक उत्पादन में यह सभ्यता अग्रणी थी; यूनानी इसे "**सिंडन**" कहते थे।
- पालतू पशु — बैल, भैंस, भेड़, बकरी, कुत्ता; हाथी से परिचय था। **घोड़े** के स्पष्ट प्रमाण परिपक्व हड़प्पा में दुर्लभ हैं (**सत्यापन**)।
- **लोहा** परिपक्व हड़प्पा में **अनुपस्थित** था।
- सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था **नगरीय** थी; ऋग्वैदिक समाज **पशुचारी** और उत्तर वैदिक समाज **कृषक** था। (UPPCS 2020)

9.2 व्यापार और शिल्प

- **मेसोपोटामिया** से व्यापार होता था; मेसोपोटामियाई लेखों में उल्लिखित "**मेलुहा**" को सिंधु क्षेत्र माना जाता है। **दिलमुन (बहरीन)** और **मगन (ओमान/मकरान)** मध्यवर्ती केंद्र थे।
- **मुहरें** मुख्यतः **सेलखड़ी (स्टीटाइट)** की थीं और उन पर पशु तथा लिपि उत्कीर्ण थी।